(२२) शासन ध्वज लहराओ

शासन ध्वज लहाओ मेरा साथी;
पञ्च कल्याण रचाओ म्हारा साथी।
आओ रे आओ आओ म्हारा साथी;
जीवन सफल बनाओ म्हारा साथी॥ टेक॥

स्वर्गपुरी से सुरपति आये, अनेकान्तमय ध्वज ले आये;
स्याद्वयाद का रङ्ग भरकर, सबका संशय तिमिर मिटाये।
परिणति में लहराओ म्हारा साथी॥ 1॥

मङ्गल स्वस्तिक चिह्न बनाओ, चार गति का दुःख नशाओ;
शुद्धातम को लक्ष्य बनाकर, भेदज्ञान की ज्योति जलाओ।
मोक्ष महल में आओ म्हारा साथी॥ 2॥

गुण अनन्तमय निर्मल आतम, अनेकान्त कहते परमातम;

धर्म–युगल जो रहे विरोधी रहते निज आतम।
निज स्वरूप रस पाओ म्हारा साथी ॥ 3 ॥

मंगल स्वर्ण–कलश ले आओ, इस पर स्वस्तिक
चिह्न बनाओ;
माता के कर कमलों द्वारा, मंगल वेदी पर पधराओ।
नाँदी विधान रचाओ म्हारा साथी ॥ 4 ॥